कर देना चाहिये।

- ❖ खड़ी फसल की निगरानी नियमित रूप से करनी चाहिये। जब 1–1.5 सुण्डी/मीटर या 10 पौधे में मिलने लगे तो तुरन्त आवश्यक फसल सुरक्षा उपाय अपनाने चाहिये।
- ❖ जैविक कीटनाशक एन.पी.बी. (विषाणु) के 250 गिडार के समतुल्य घोल या बी.टी.के. (जीवाणु) की 1 लीटर मात्रा / हैक्टर की दर से छिड़काव करें।
- ❖ नीम की निम्बौली के सत का 5 प्रतिशत घोल फल छेदक कीट की सूण्डी को नियंत्रित करने में बहुत ही उपयोगी पाया गया है। यह सस्ता एवं सुरक्षित उपाय है।
- ❖ फूल एवं फल बनते समय कीट प्रकोप अधिक होने पर मेलाथियान 50 ई.सी. की 2 मिली मात्रा/लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये।

भिण्डी : भिण्डी के फल छेदक कीट को हिन्दी में धब्बेदार सूण्डी व वैज्ञानिक भाषा में इयेरिस बिटेला व इयेरिस इन्सुलेना कहते है। इस कीट की इल्ली भूरे रंग की होती है तथा शरीर पर कई जगह काले एवं नारंगी रंग के धब्बे होते हैं। प्रौढ़ कीट के अगले जोड़ी पंख हरे रंग के होते हैं। यह इल्ली तनों एवं फलों में छेद करके नुकसान पहुँचाती है। यह कीट भिण्डी के अलावा कपास, सन, गुडहल, हालीहाक तथा मालवेसी कुल के अन्य पौधों को नुकसान पहुँचाती है।

यह कीट लगभग पूरे वर्ष सक्रिय रहता है। इसकी केवल सूण्डी ही हानिकारक होती है। इस कीट के द्वारा बहुत ही अधिक क्षति होती है। मादा पौधों के कोमल भागों में अण्डे देती है जिनमें छोटी–छोटी सूडियाँ निकलकर पहले कोमल पत्तियों को खाती है तथा बाद में मुलायम टहनियों में छेद करके सुरंग बनाकर रहती है। फलस्वरूप कोमल टहनी मुरझाकर लटक जाती है और पौधों की बढ़वार रूक जाती है। इसके पश्चात् सूंडी फूल एवं फलों पर आक्रमण कर देती है। फल के अन्दर घुसकर प्रवेश द्वार मल से बन्द कर देती है। इस तरह के फलों का उचित बाजार मूल्य नहीं मिल जाता है।

प्रबंधन :

- ❖ फसल की कटाई के बाद खेत को मिट्टी पलटने वाले हल से जोत देवें ताकि छिपी हुई सुण्डी नष्ट हो जाये।
- ❖ खेत के आस'पास उग रहे मालवेसी कुल के पौधों को नष्ट कर देना चाहिए।
- ❖ कीट ग्रसित टहनियों, पत्तियों एवं फलों को इक्ट्ठा करके गड्डे में दबा देना चाहिये।
- ❖ कीट प्रकोप होने पर क्विनालफॉस 25 ई.सी. की 8 मि.ली. मात्रा / लीटर पानी में मिलाकर उपयोग करना चाहिये।

प्रस्तुतकर्ता :

पी. मूवेन्थन, मुरली बास्करन, अनिल दीक्षित, के. सी. शर्मा, पी. एन. शिवलिंगम, अमित कुमार गुप्ता, अमित दीक्षित, उत्तम सिंह एवं कन्हैया जायसवाल।

प्रकाशक :

निदेशक
भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय जैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान
बरोंडा, रायपुर, छत्तीसगढ़– 493225
फोन – 0771–2225333
वेबसाईट – www.nibsm.org.in

Publication No. 13, 2018

Farmer FIRST

Farmer FIRST Programme
फार्मर फर्स्ट प्रोग्राम
(Agricultural Extension Division)
(कृषि प्रसार विभाग)
Indian Council of Agricultural Research
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

टमाटर, भिण्डी एवं मिर्च में फल छेदक प्रबंधन

ICAR - National Institute of Biotic Stress Management
भाकृअनुप – राष्ट्रीय जैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान
Baronda, Raipur, Chhattisgarh - 493225, Ph. 0771-2225333
बरोंडा, रायपुर, छत्तीसगढ़ - 493225, फो. 0771-2225333
Website : www.nibsm.org.in

सब्जियों का हमारे संतुलित भोजन में महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि सब्जी के द्वारा ही विटामिन, प्रोटीन एवं खनिज लवणों की पूर्ति होती है, प्रतिदिन भोजन में प्रति व्यक्ति लगभग 300 ग्राम सब्जियों की आवश्यकता होती है। उत्पादन की दृष्टि से हमारा देश अन्य देशों की तुलना में पीछे है। उत्पादन एवं उत्पादकता में कमी का कारण किसानों के बीच नवीनतम उत्पादन तकनीक एवं कीट नियंत्रण विधियों का अभाव है। जिसके फलस्वरूप किसान को अपनी मेहनत के हिसाब से प्रति हैक्टर उत्पादन नहीं मिल पाता है व आर्थिक नुकसान सहना पड़ता है।

टमाटर, मिर्च व भिण्डी की फसल को बहुत से नाशीकीट नुकसान पहुँचाते हैं जिनमें फल छेदक कीट प्रमुख है। यह टमाटर व मिर्च के अलावा अरहर, सूरजमुखी कपास आदि पर आक्रमण करता है तथा हानि पहुँचाता है।

हानिः

व्यस्क कीट एक पंतगा होता है परन्तु हानि इसके इल्ली

या सूँडी द्वारा पहुँचाई जाती है। इस कीट की इल्ली शुरू में पत्ती की हरियाली खुरचकर खाती है, फूल आने पर फूलों को खाती है एवं फल आने पर छेद करके उनके अंदर घुसकर खाती रहती है। जिसके फलस्वरूप फल खाने के लायक नहीं रह पाते है और उनका बाजार में उचित मूल्य नहीं मिल पाता है।

पहचान :

प्रौढ़ कीट के अगले जोड़ी पंखों पर सेम के बीज के समान काले रंग के धब्बे दिखाई देते हैं जबकि पिछले जोड़ी पंख सफेद रंग के होते हैं। मादा नर की अपेक्षा थोड़ी आकार में बड़ी होती है तथा धड़ के निचले सिरे पर उपस्थित रोयों के गुच्छों से आसानी से पहचानी जा सकती है।

जीवन चक्र :

मादा प्रायः शाम के समय अण्डे देती है। अण्डे पौधें के कोमल भागों में दिये जाते हैं। इनकी संख्या 400 से 1000 तक हो सकती है। इन अण्डों से 3 से 4 दिनों के भीतर प्रथम अवस्था गिडार निकलती है। प्रारम्भिक अवस्था की गिडारें मुख्यतः पत्तियों तथा फूलों को खाती है। सामान्यतः 5 गिडार अवस्थायें पाई जाती है। गिडार अवस्था 8 से 25 दिन तक रहती है, उसके पश्चात् प्यूपा में बदल जाती है। प्यूपा एक निष्क्रिय अवस्था होती है। इसका रंग गहरा भूरा होता है। प्यूपा से व्यस्क कीट का उद्‌गम होता है।

प्रबंधन :

- ❖ सिंचाई एवं रासायनिक खाद का उचित मात्रा में प्रयोग करना चाहिये।
- ❖ जहाँ तक संभव हो शुरू में ही इल्लियों को हाथ से पकड़कर नष्ट कर देना चाहिए।
- ❖ इस कीट का प्यूपा (शंखी) मिट्‌टी में पाया जाता है अतः गर्मी के दिनों मे खेत की गहरी जुताई करके नष्ट कर देना चाहिये।
- ❖ टमाटर के साथ अन्तराःशस्य के रूप में गेंदा (45 दिन पुरानी पौध) का रोपण टमाटर की 16 पंक्ति के बाद एक पंक्ति गेंदा की पौध लगायें।
- ❖ क्षतिग्रस्त फलों को इल्ली सहित इकट्‌ठा करके मिट्‌टी में दबा देना चाहिये।
- ❖ इस कीट प्रौढ़ प्रकाश प्रपंच (लाइट ट्रेप) या यौन–सम्मोहन (फेरोमोन ट्रेप) प्रपंच की ओर आकर्षित होते हैं। अतः प्रकाश प्रपंच या यौन सम्मोहन का उपयोग कर प्रौढ़ कीटों को नष्ट